International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -10+11 Month – January+February 2018 pp. (27 – 30)

प्रणामी धर्म का विश्वशान्ति के लिये योगदान

जय प्रकाश शाक्य
विभागाध्यक्ष–दर्शनशास्त्र
शा.महाराजा स्वशासी महाविद्यालय, छतरपुर(म.प्र.)

सार संक्षेप

महामति प्राणनाथ द्वारा प्रवर्तित प्रणामी धर्म में सर्वधर्मसमन्वय की अवधारणा स्वीकार की गई है। प्रणामी धर्म का आधार तारतमवाणी या कुलजमस्वरूप है। कुलजमस्वरूप में विश्व के सभी धर्मों का सार समाया हुआ है। महामति प्राणनाथ ने विश्व के सभी धर्म ग्रंथों के धार्मिक पक्षों का खुलासा कर सर्वधर्मसमन्वय का प्रयास किया है। उन्होंने कहा है कि ''जो कुछ कह्या कतेव ने, सोई कह्या वेद''। प्रणामी धर्म ''सुख शीतल करूँ संसार'' के महान उद्देश्य को लेकर मानव मात्र का कल्याण करना चाहता है। उन्होंने धर्म के क्षेत्र में व्याप्त वाह्याडम्बर का विरोध किया तथा सम्प्रदायिकता का खण्डन किया। प्रणामी धर्म विश्व के सभी धर्मों, वर्णों, वर्गों एवं जातियों के लोगों के लिये समानता का व्यवहार कर सुन्दरसाथ की अवधारणा का प्रतिपादन करता है, जहाँ विश्व के सभी मनुष्य एक मंच पर खड़े दिखाई देते हैं। प्रणामी धर्म प्रेम आधारित मानव समाज की रचना का पक्षधर है, जिसमें हिंसा, बैर, घृणा, अविश्वास के लिये कोई स्थान नहीं है। सुन्दरसाथ के अवधारणा में जाति–पाति, ऊँच–नीच, धर्म–भेद, वर्ग–भेद, वर्ण–भेद आदि को अस्वीकार करके मानवीय समानता पर बल दिया गया है। निसंदेह, प्रणामी धर्म का विश्वशान्ति के लिये अद्वितीय योगदान है जो युग–युगान्तर तक सदैव याद किया जाता रहेगा।

प्रणामी धर्म का विश्वशान्ति के लिये योगदान

महामति प्राणनाथ द्वारा प्रवर्तित प्रणामी धर्म में सर्वधर्मसमभाव या सर्वधर्मसमन्वय की अवधारणा स्वीकार की गयी है। प्रणामी धर्म मूलतः श्री कृष्ण भक्ति पर आधारित है। भगवान श्रीकृष्ण का 11 वर्ष 52 दिन का पवित्र स्वरूप प्रणामी धर्म में पूज्य व आराध्य है। श्रीराज जी के साथ श्री श्यामा जी ही ब्रह्मात्माओं के लिए सर्वस्व हैं। ब्रजरास, महारास तथा जागनी रास भक्तों के लिए अखण्ड सुख का प्रदाता है। संसार के सभी धर्मों की एकता प्रणामी धर्म में देखने को मिलती है। श्रीकृष्ण भक्ति की परम्परा पर आधारित प्रणामी धर्म विश्व के सभी धर्मों, वर्णों, वर्गों, जातियों के मनुष्य के लिये परमधाम का द्वार खोलने को तत्पर है। बिना भेदभाव के सभी लोग इस मानव धर्म का लाभ उठा सकते हैं।

धर्म जीवन का संविधान है जो व्यक्ति के व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक कर्तव्यों की व्याख्या करके कर्तव्य पालन के लिये प्रेरित करता है। वस्तुतः धर्म नीति, नियमों का अवलम्बन व्यक्तित्व का विकास, चरित्र–निर्माण जिसमें श्रमशीलता, मितव्यता, समझदारी, जिम्मेदारी, ईमानदारी आदि जो मानव गरिमा के अनुकूल है, उन सबका समन्वय है।

महामति प्राणनाथ के प्रणामी धर्म का आधार तारतमवाणी है। तारतमवाणी को तारतमसागर, कुलजमसरूप, श्रीमुखवाणी स्वरूपसाहब और प्राणनाथवाणी के नामों से सभी जाना जाता है। समस्त धर्मों का आध्यात्मिक चिन्तन महामति प्राणनाथ की वाणी में अवतरित हुआ है। ज्ञान का महासागर है कुलजमसरूप। महामति का धार्मिक आधार तर्क संगत सत्यानुभूति पर आधारित है। महामति की वाणी में विश्व के सभी धर्मो का सार समाया हुआ है। उन्होंने प्राचीन और अर्वाचीन, भारतीय एवं पश्चात्य, सांसारिक एवं आध्यात्मिक, नैतिक एवं धार्मिक मान्यताओं का समन्वय एवं सामंजस्य तारतम वाणी में किया है। वेद और कतेब ग्रंथों का समन्वय करके उनकी श्रेष्ठ मान्यताओं को तारतमवाणी में प्रकट किया है। वे कहते हैं–

''वेदान्त, गीता भागवत, दैयां इसारतां सब खोल।
मगज मायने जाहेर किए, माहें गुझ हते जो बोल।।
अंजीर, जंबूर, तौरेत, चौथी जो फुरकान।
एक मायने मगज गुझ थे, जो जाहेर किये बखान।''[1]

महामति प्राणनाथ तारतमवाणी के द्वारा मानव एकता स्थापित करना चाहते थे। वे कहते हैं –''ए बानी तो करूँ जाहेर, जो करना सबों एक रस।'' इस प्रकार प्राणनाथ जी के प्राणामी धर्म का आधार कुलजमसरूप या तारतमवाणी है।

महामति प्राणनाथ प्रणामी धर्म के प्रवर्त्तक थे। वे इसे विश्व धर्म के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहते थे, इसलिये उन्होंने वेद, उपनिषद, गीता पर आश्रित हिन्दु धर्म, कुरान पर आश्रित इस्लाम, मूसा पैगम्बर का जंबूर, दाऊद पैगम्बर का तौरेत, ईसा पैगम्बर का बाइबिल आदि का समन्वित रूप जन सामान्य के समक्ष रखा और घोषित किया कि–

''वेद कतेब एक बतावहीं, पर पाये न कोई विवेक।
जो कुछ कहया कतेब ने सोई कहया वेद।।''[2]

महामति प्राणनाथ के धर्म का प्रयोजन था सत्य का साक्षात्कार। वस्तुतः विश्व के सभी धर्मों का प्रयोजन सुखमय संसार की रचना है, जहाँ मानव सांसारिक लोक व्यवहार में रहकर मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर सके। प्रणामी धर्म भी 'सुखशीतल करूँ संसार' के महान उद्देश्य को लेकर मानव मात्र का कल्याण करना चाहता है। महामति कहते हैं–

Corresponding Author : email :

International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -10+11 Month – January+February 2018 pp. (27 – 30)

''करना सारा एकरस, हिन्दु मुसलमान।
धोखा सबका भान के, कहूँगी सबका ज्ञान।।''[3]

इस प्रकार भारतीय मनीषियों ने सत्य का साक्षात्कार सर्वोपरि माना है। वेदों का सार सत्य है। यज्ञ, दान, तप, इन्द्रिय संयम, वेद, वेदांग ब्रह्मचर्य आदि सभी साधनाओं की जड़ में सत्य प्रतिष्ठित है। वेद से लेकर वेदान्त तक, आस्तिक से लेकर नास्तिक तक, ग्रहस्थ से लेकर संत तक, ज्ञानी से लेकर भक्ति एवं कर्ममार्गी तक सभी सत्य के पथ को श्रेयस्कर मानते हैं। वस्तुतः आध्यात्मिक अनुभतियों को प्राप्त करने की कोई उम्र नहीं होती और आध्यात्मिक ज्ञान के विस्तार की कोई सीमा नहीं होती। सत्य धर्मी ऋषियों ने भारत में अपने आध्यात्मिक चिन्तन में सत्य को सदैव सर्वोपरि मान। महामति प्राणनाथ ने अपनी वाणी में सत्य को प्रतिष्ठित करते हुए कहा कि–

''सत्य व्रत धारणसुं पालिए, जिहां लगे ऊभी देह।
अनेक विघन पड़े जो माथे, तोहे न मूकिए सनेह।।''[4]

अर्थात् जिसने सत्य व्रत धारण करने का संकल्प किया हो तो शरीर में प्राण रहने तक उसे दृढ़तापूर्वक निभाना चाहिए। अनेक विघ्न बाधाएं आने पर भी सत्य के प्रति प्रेम नहीं छोड़ना चाहिए।

महामति प्राणनाथ ने धर्मक्षेत्र में व्याप्त वाह्याडम्बरों का तीव्र विरोध किया। वे वाह्याडम्बरों को कुकर्म मानते हैं। वे कहते हैं–

''दुष्ट थई अवगुण करे, ते जै जमपुरी रोए।
पण साध तई कुकरम, तेनु ठाम न देखूं कोए।।''[5]

अर्थात् जो लोग दुष्ट बनकर अवगुण करते हैं वे रोते हुए यमपुरी के दण्ड भोगते हैं परन्तु जो साधु बनकर कुकर्म करते हैं, उनके लिए मुझे कहीं भी ठिकाना नजर नहीं आता है। महामति ने वाह्याडम्बरों का विरोध किया क्योंकि इनसे साधु और असाधु में भेद नहीं हो पाता है। वे अपनी वाणी में कहते हैं–

''क्रोध अहंमेव समे नहीं, अने वेष धरो छो साध।
लोभ लज्या नमें नहीं, मांहे मोटी ते ए व्राध।।
उत्तम कहावो आपने, अने नाम धरावो साथ।
साथ मल्यो नव ओलखो, माहें अवगुण ए अगाध।।''[6]

अर्थात् क्रोध और अहंकार तुम्हारे अंदर समा नहीं रहें है तथा साधुवेश धारण किया है। लोभ और मान मर्यादा के कारण विनम्रता नहीं आती, तुम्हारे अंदर यही महारोग है। स्वयं उसे पहिचानते नहीं हो, यही तुम्हारे अंदर बड़ा अवगुण है।

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि संसार के संतों, वैरागियों और साधुओं की साधुता को देखा है। उनमें अनेक लोग वाह्याडम्बर पूर्ण भक्ति का ढोंग रचा रहे हैं। भीतर से तो उनकी स्थिति भांडो की भांति मात्र स्वांग रचा रही है। ऐसे संतो के हृदय में एकग्रता कैसे आयेगी। इसलिए यह संसार कुहिर के समान अज्ञान रूपी अंधकार से भरा हुआ है जिससे सच्चे साधुओं का सत्संग ही छूट गया है। इस प्रकार महामति प्राणनाथ ने अपनी वाणी में वाह्याडम्बरों की तीव्र निन्दा की है।

महामति प्राणनाथ ने अपनी वाणी में साम्प्रदायिकता का तीव्र विरोध करते हुए सत्य मानव धर्म की स्थापना की है। वे मानते हैं कि साम्प्रदायिकता मनुष्य को मनुष्य से अलग करती है जबकि धर्म मनुष्य या समाज को तोड़ता नहीं बल्कि जोड़ता है। इस संसार में अनेक पंथ सम्प्रदाय है। उनकी रीति–नीति, वेशभूषा, भाषा भी अलग है फिर भी वे सब परमात्मा को खोज रहे हैं। परमात्मा की खोज में वे अलग–अलग हो गये हैं। सब लोग अलग–अलग रीति–रिवाज बनाकर आपस में लड़ते रहते हैं तथा स्वयं को बड़ा बताकर पानी, पत्थर और आग की पूजा करते हैं। यद्यपि दुनियां के समस्त धर्म समानता, समभाव, मातृत्व और विश्वशान्ति के लिए प्रयासरत है परंतु सभी अपने–अपने अनुयायियों तक सीमित है। अतः धर्म के नाम पर साम्प्रदायिकता फैलती जा रही है। धर्म के नाम पर रक्तपात द्वेष, घृणा, बैर फैलते जा रहें हैं। महामति प्राणनाथ ने साम्प्रदायिकता का तीव्र विरोध किया है। वे धर्मान्धता को धर्म का सबसे बड़ा अभिशाप मानते हैं। विश्व युद्धों के इतिहास में धर्म के नाम पर रक्तपातों का इतिहास लम्बा है।

महामति 'किरन्तन' कहते है कि– प्रेम ही आत्मा को निर्मल करता है। प्रेम ही आचरण को श्रेष्ठ बनाता है।

''उत्पन्न प्रेम पारब्रह्म संग, वाको सुपना हो गयो साकार।
प्रेम बिना सुख पार को नहीं, जो तुम अनेक करो आचार।।
सखियों साथ प्रेम रस मानो, छडूटे अंग विकार।
पर आतम अंतस्करन उपज्यों, खेले संग आधार।।''[7]

प्राणनाथ जी के अनुसार प्रेम ही परमधाम का द्वार है। तारतमवाणी में प्रेम को परमधाम की प्राप्ति का सर्वोच्च साधन माना गया है।

महामति प्राणनाथ ने प्रेम की अवधारणा का प्रसार न केवल जीवधारियों तक किया बल्कि वनस्पति जगत प्रेम का प्रसारण किया। इसलिए वे सदा सर्वदा सभी को शीतल नैन एवं मीठे बैन से आत्मवत् बनाना चाहते हैं।
'कलश' में वे कहते हैं–

दुःख न देऊं फूल पाँखुड़ी, देखूँ शीतल नैन।
उपजाऊ सुख सबों अंगो, बोलाऊ मीठे बैन।।''[8]

महामति प्राणनाथ प्रेम को परमात्मा मानते थे वे कहते हैं कि–

''प्रेम ब्रह्म दोऊ एक हैं।।''[9]

प्रेम के लिए चौदह भुवन एवं परमधाम में कोई अवरोध नहीं है–

''प्रेम खोल देवे सब द्वार, पार के पार जो पार।''[10]
''पंथ होवे कोट कलप, प्रेम पोहोंचावे मिने पलक।
जब आतम प्रेम से लागी, दृष्टि तबहीं अन्तर जागी।।''

महामति मानते हैं कि प्रेम से ही परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है। वे 'प्रकाश' ग्रंथ में लिखते हैं कि–

''तुम प्रेम सेवाएं पाओग पार, ए वचन धनी कहे निरधार।

स्पष्ट है कि महामति प्राणनाथ ने प्रेम को जीवन का आधार माना है तो परमधाम का मार्ग भी प्रेम का मार्ग माना है और परमधाम का द्वार भी। वस्तुतः वे प्रेम और ज्ञान की मूर्ति थे। कहा गया है कि– 'पूरत ब्रह्म प्रगट भये, प्रेम सहित लै ज्ञान।'

Corresponding Author : email :

International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -10+11 Month – January+February 2018 pp. (27 – 30)

महामति प्राणनाथ ने अपनी वाणी मं सर्वधर्मसमन्वय की अवधारणा को अपनाया है। उन्होंने माना है कि– 'पारब्रह्म पूरन तो एक है'

इसी तत्वज्ञान के आधार पर उन्होंने सर्वधर्मसमन्वय की अवधारणा को अपनाया है। उनकी सर्वधर्मसमन्वय की अवधारणा 'खुलासा' ग्रंथ में मुखरित हुई। वे कहते हैं कि–

''सब जातें नाम जुदे धरे और सबका खाबंद एक।
सबको बंदगी याही की, पीछे लड़े बिना पाए विवेक।।''[11]
''नाम सारों जुदे धरे, लई सबों जुदी रसम।
सबमें उमत और दुनियां सोई खुदा सोई ब्रह्म।।''[12]

महामति प्राणनाथ स्वीकार करते हैं कि कुरान और पुराण में एक ही सत्यधर्म के दर्शन होते हैं। उन्होंने कहा है कि–

''जुदे जुदे नाम गवहीं, जुदे जुदे भेख अनेक।
जिन काई झगड़ों आपमें, धनी सबों का एक।।''

अर्थात् मनुष्य भिन्न–भिन्न नामों से एक ही पूर्ण ब्रह्म परमात्मा के गुण गाते हैं, उन्होंने अपनी वेशभूषा भी अलग–अलग बनाई है, परस्पर झगड़ा मत करो, परमात्मा सबका एक है। संसार के सभी धर्म एक ही परमात्मा तक पहुँचने में अलग–अलग मार्ग है। महामति प्राणनाथ उद्देश्य सभी धर्मों का सारतत्व जनसमान्य के समक्ष लाना था वे अपनी वाणी में कहते हैं कि–

''करना सारा एक रस, हिन्दु मुसलमान।
धोखा सबका भान के, कहूँगी सबका ज्ञान।।''[13]
''ब्राह्मण कहे हम उत्तम, मुसलमान कहे हम पाक।
दोउ मुट्ठी एक ठौर की, एक राख दूजी खाक।।''[14]

खुलासा वे स्पष्टीकरण करते हुए कहते हैं कि–

''लोक चौदे कहे वेद ने, सोई कतेब चौदे तबक।
वेद कहें ब्रह्म एक हैं, कतेब कहें एक हक।।''[15]

महामति प्राणनाथ घोषित करते हैं–

''जो कुछ कहया कतेब ने, सोई कहया वेद।
दोउ बंदे एक साहब के, पर लड़त बिना पाये भेद।।''[16]

महामति प्राणनाथ की वाणी में धर्म के प्रति उनका लक्ष्य स्पष्ट था। उनका लक्ष्य हिन्दु, मुसलमान, ईसाई, यदूदी आदि सभी धर्मावलम्बियो के बीच आपसी भेदभाव मिटाकर धार्मिक एकता स्थापित करना था। वे संसार के बीच विभिन्न धर्मों के श्रेष्ठ तत्वों को एक साथ लाना चाहते थे। प्रोफेसर हरेन्द्र प्रसाद वर्मा ने लिखा है कि ''धर्म के क्षेत्र में जो अज्ञान, अंधविश्वास और उलझन थी, उसे महामति प्राणनाथ ने दूर किया। सच्ची धर्मभावना और आन्तरिकता के स्थान पर कर्मकाण्ड की प्रधानता थी, उनकी निरर्थकता जताई और शरीयत के स्थान पर हकीकत, मारफत आदि को प्रकाशित किया। उन्होंने अनुभव के आधार पर एक विश्वजनीन दर्शन दिया जो विश्वधर्म बना सकें।''

महामति प्राणनाथ पूरे विश्व को शान्ति और आनंद दिलाना चाहते थे, इसलिये उन्होंने 'सुख शीतल करूँ संसार' की अवधारणा पर प्रणामी धर्म को स्थापित किया। उन्होंने विभिन्न धर्मों में व्याप्त अहंकार और अज्ञान को तारतमज्ञान के द्वारा दूर करने का सार्थक प्रयत्न किया। वे मानते थे कि सभी धर्म परामात्मा, प्रेम और परमधाम की ओर संकेत करते हैं तारतम ज्ञान द्वारा ही परमात्मा, प्रेम और परमधाम तक जीवात्मा (जीव) पहुँच सकता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि महामति प्राणनाथ ने तत्कालीन समय में व्याप्त धार्मिक–विद्वेषों को समाप्त करके एक समन्वित प्रणामी धर्म की स्थापना की। एक ऐसा धर्म जहां विश्व के सभी धर्मानुयायी अपने धर्म के वास्तविक स्वरूप का दर्शन कर सकें और अपने धर्म के साथ अन्य धर्मों की वास्तविकताओं का ज्ञान प्राप्त कर सत्यधर्म का आचरण कर सकें।

महामति प्राणनाथ ने अपनी वाणी में स्पष्ट किया है कि–

''कुरान पुरान वेद कतेबों, किये अर्थ सब निरधार।
टाली उरझन लोक चौदे की, मूल काढ़यो मोह अहंकार।।''
एक सृष्टि धनी भजन एकै, एक गान एक अहंकार।
छोड़ के वैर मिले सब प्यार सो, भया सकल में जै–जै कार।।''

वस्तुतः प्राणनाथ जी का समन्वय वादी दृष्टिकोण की सर्वधर्म समन्वय को विकसित करने में सहायक सिद्व हुआ। धर्म समन्वय की भाव भूमि पर प्रतिष्ठित है, प्रणामी धर्म। प्रणामी धर्म एक ऐसा विश्वधर्म है जहां समस्त धर्म अपनी पूरी प्रतिष्ठा के साथ संयुक्त हो जाते हैं और अपने सिद्धान्तों से आगे मानव को परमधाम तक ले जाता है, जहां आज तक कोई धर्म नहीं ले जा सका। वहां जीवात्मा परमात्मा का दर्शन कर अखण्ड सुख का अनुभव करती है। प्रणामी धर्म विश्व हितकर धर्म है इसमें न केवल मानव कल्याण का भाव है बल्कि पशु–पक्षियों तक वनस्पति जगत एक महाकरुणा का प्रसार होता है। संपूर्ण चर–अचर जगत यहां अखण्ड सुख प्राप्ति का मार्ग प्रशंसा करता है। सर्वजन हिताय–सर्वजन सुखाय की अवधारणा यहां साकार हो उठती है।

यह सत्य है कि धर्म की सृष्टि व्यक्ति के अभ्युदय के लिए हुई है किन्तु व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व से पृथक नहीं है। व्यक्तियों का समूह ही समाज राष्ट्र या विश्व के नाम से पुकारा जाता है। वर्तमान विश्व की जो समस्यायें है वे वस्तुतः विश्व में बसने वाले व्यक्तियों की ही समस्यायें हैं। विगत दो सौ वर्षों में विज्ञान ने प्रगति के नये आयाम छुये हैं। विज्ञान को विकास और विनाश की जन्मस्थल कह सकते हैं। विज्ञान के आविष्कारों ने मानव जीवन को बेहतर, सुखी और सम्पन्न बनाया है तो अत्याधुनिक अस्त्रशस्त्रों का निर्माण करके विनाश के कगार तक भी पहुंचाया है। युद्धों के महाविनाश ने युद्ध लड़ने वालों को भी भयभीत किया है। सब चाहते हैं कि युद्ध न हो किन्तु युद्ध के कारण है उन्हें कोई नहीं छोड़ना चाहते। सर्वत्र राजनीतिक और आर्थिक संगठनों में पारस्परिक अविश्वास और प्रतिहिंसा की भावना छुपी हुई है। विभिन्न राष्ट्रों और जातियों के बीच तनाव हिंसात्मक व्यवहार की प्रधानता है। स्वार्थपरता, बेईमानी, धोखेबाजी ये सब हिंसा के प्रतिरूप है इनके रहते हुए राष्ट्रों और जातियों के बीच मानव जीवन के

Corresponding Author : email :

International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -10+11 Month – January+February 2018 pp. (27 – 30)

बीच दया, करुणा, मैत्री व परस्पर पूरकता कैसे रह सकती है ? प्रणामी धर्म, सुन्दर साथ सिद्धान्त पर आधारित है। यह सिद्धान्त न केवल व्यक्तियों के लिए अनिवार्य है बल्कि समाजों और राष्ट्रों के लिए भी अनिवार्य है, जब तक विभिन्न राष्ट्र और समाज इस सिद्धान्त को नहीं अपनाते तब तक विश्व की समस्यायें नहीं सुलझ सकतीं। राष्ट्रों की शासन प्रणाली, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओं में अहिंसा सिद्धान्त के आधार पर परिवर्तन एवं संशोधन होने चाहिए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बल प्रयोग के आधार पर मानवीय संबंध नहीं सुधारे जा सकते हैं। सामाजिक जीवन में बहुत अंशों में सहानुभूति, दया, प्रेम, त्याग और सौहार्द का ही स्थान रहता है। व्यक्तिगत आचरण से ही सामाजिक एवं राष्ट्रीय आचरण बनता है। प्रणामी धर्म व्यक्तिगत आचरण की श्रेष्ठता पर जोर देता है।

आज विश्व की समस्याओं का मुख्य कारण शराब, धम्रपान, चोरी एवं परदारागमन भी है। मांस और शराब का सेवन भी है। मद्य और मांस ऐसी चीजें है जो शरीर और मन दोनों को विकृत करती है। दोनों तामसिक है। तामसिक आहार और विहार के कारण सात्विक भावों का विकास नहीं हो सकता। सात्विक भावों के बिना अहिंसक वातावरण नहीं बन सकता और अहिंसक वातावरण कि बिना विश्व शान्ति की स्थापना असंभव है। हमें मद्य और मांसाहार को त्यागना होगा तभी अहिंसक विश्व की कल्पना कर सकते है। प्रणामी धर्म में शराब तम्बाकू, चोरी और परदारागमन का पूर्णतः वर्जित है।

आज पूरे विश्व में आतंकवाद के बादल मंडरा रहे हैं। आतंकवाद भस्मासुर की तरह फैलता जा रहा है। आतंकवाद असामाजिक, असांस्कृतिक, असंवैधानिक, अनैतिक एवं अवांछनीय कार्य पद्धति है जिसका उद्देश्य निरीह, निरपराध लोगों की हत्या करके व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक सम्पत्ति को नष्ट करके जनता में आतंक और दहशत फैलाकर, कानूनी और सामाजिक व्यवस्था को तोड़कर, प्रशासनतंत्र को असफल कर अपने लक्ष्यों के लिये सरकार को विवश करना है। आतंकवाद की समस्या राष्ट्रीय नहीं अन्तर्राष्ट्रीय है। विश्व के सभी शक्तिशाली देश भी आतंकवाद से अछूते नहीं रहे हैं। सभी भयभीत हैं, सभी निजात पाना चाहते हैं। किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय समस्या का हल केवल शासन व सत्ता के द्वारा संभव नहीं है जब तक कि हृदय परिवर्तन की प्रणाली को न अपनाया जाए। हृदय परिवर्तन की परम्परा में धार्मिक एवं दार्शनिक परम्परा का विशेष महत्व होता है क्योंकि यही व्यक्ति के आचार–विचार और अन्तरात्मा को प्रभावित करती है। प्रणामी धर्म की नैतिक व दार्शनिक मान्यतायें आज भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्याप्त आतंकवादियों के हृदय परिवर्तन में सक्षम है। अहिंसा ही समस्त समस्याओं का निदान है, बल प्रयोग नहीं। यदि युवकों में अहिंसा भावना को विकसित किया जाये तो आतंकवाद स्वतः समाप्त हो जायेगा।

आज सम्पूर्ण विश्व आशाभरी नजरों से देख रहा है कि फिर पृथ्वी पर महामति प्राणनाथ जैसा महामानव आये जो आतंकवादियों और मानवता की राह से भटके हुए लोगों को हिंसा, असत्य, अचौर्य, कुशील एवं मद्यपान से रोके, उनका हृदय परिवर्तन करें, उन्हें मानवता की राह बताये, अपनाये, गले लगाये और पुनः समाज में उन्हें सम्मानजनक स्थान व सम्मान दिलाये जिससे वे आतंक, नफरत, अशांति, वैर, घृणा और दहशत की राह से विरत होकर अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य की राह पर चल सके। प्रणामी धर्म और दर्शन में लोकतंत्र को नहीं बल्कि प्राणीतंत्र को अपनाया गया है जो लोकतंत्र का अधिक व्यापक रूप है। इसमें प्रत्येक जीवों की हिंसा का निषेध किया गया है, जिससे विश्वशांति एवं सामाजिक न्याय व्यवस्था में सहायता मिलती है। प्रणामी धर्म जीवों के रूप में पृथ्वीकाय, जलकाय, वनस्पतिकाय, वायुकाय और अग्निकाय जीवों की हिंसा करने का भी विरोध करता है। यह विचार विश्व के पर्यावरण असंतुलन को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

निःसंदेह प्रणामी धर्म और दर्शन की मान्यतायें आज भी विश्वशान्ति की पुनर्स्थापना में सक्षम है। प्रणामी धर्म और दर्शन की मान्यताओं की जितनी अधिक आवश्यकता और उपयोगिता महामति प्राणनाथ के समय थी उससे कहीं अधिक आवश्यकता और उपयोगिता आज के समय में है और भविष्य में बनी रहेगी। सुखमय जीवन, सुखमय समाज, सुखमय राष्ट्र और सुखमय विश्व की परिकल्पना को प्रणामी धर्म और दर्शन की मान्यतायें साकार कर सकती हैं।

संकेताक्षर :

1. खुलासा प्रकरण 13 चौपाई 96–97
2. खुलासा प्रकरण 12 चौपाई 41
3. सनंद प्रकरण 3 चौपाई 3
4. किरन्तन प्रकरण 126 चौपाई 29
5. किरन्तन प्रकरण 128 चौपाई 7
6. किरन्तन प्रकरण 128 चौपाई 8–9
7. किरन्तन प्रकरण 81 चौपाई 6
8. कलश प्रकरण 23 चौपाई 4
9. परिक्रमा प्रकरण 39 चौपाई 10
10 परिक्रमा प्रकरण 1 चौपाई 24
11.खुलासा प्रकरण 1 चौपाई 22
12 खुलासा प्रकरण 12 चौपाई 38
13. सनंध प्रकरण 40 चौपाई 43
14.सनंध प्रकरण 40 चौपाई 42
15. खुलासा प्रकरण 12 चौपाई 29
16. खुलासा प्रकरण 12 चौपाई 42

Corresponding Author : email :